'सोलो' तबला वादक बनना चाहता है शादाब

शादाब हुसैन भारतीय नौजवान पीढ़ी के उभरते हुए उन तबला वादकों में से एक हैं जिन्होंने छह सात साल की उम्र से ही स्कूलों में आयोजित प्रतियोगिताओं में अपनी कला के जौहर दिखाने शुरू कर दिए थे। और हर प्रतियोगिता में प्रथम आया।



शादाब हुसैन का जन्म संगीत घराने में ही हुआ है, पिता रोशन जमाल मशहूर सितार वादक है, जिनकी छत्रछाया में शादाब का रुझान संगीत की तरफ बचपन से ही रहा है, तबला उनका पसंदीदा वाद्य रहा है, नन्हीं उंगलियां जब तबले पर पहुंच भी नहीं पाती थीं तो पिता ने उन्हें पंडित मांगीलाल जी जयपुर वाले से उन्हें प्रारंभिक तालीम दिलवाई। ग्यारह साल की उम्र में

• प्रतिभा •

उस्ताद हिदायत खां साहब मशहूर तबला नवाज की छत्रछाया में शादाब की तालीम शुरू करवाई गई। अभी भी शादाब हुसैन उन्हीं से तबले की तालीम ले रहे हैं। अट्ठारह साल की छोटी उम्र में ही शादाब ने कल के कलाकार नामक संस्था से तालमणि पाया है।

शादाब ने १९९५ में महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री मनोहर जोशी से अवार्ड लिया। यह अवार्ड शादाब को पूरे महाराष्ट्र में अंतर स्कूलीय प्रतिस्पर्धा में प्रथम आने पर मिला। शादाब हुसैन ने हिंदुस्तान में कई जगह संगीत के कार्यक्रमों में भाग लिया है। जोधपुर, जयपुर, बीकानेर, गुजरात वगैरह में टीवी के कई चैनलों पर भी शादाब हुसैन अपने तबले के जौहर दिखा चुके हैं।

शादाब आत्मविश्वास से कहते हैं कि अभी तो शुरुआत है। अभी तो मुझे और भी आगे जाना है। नयन घोष, आनंद चैटर्जी और साबिर भाई शादाब के पसंदीदा तबला वादक हैं। शादाब हुसैन अपने उस्ताद हिदायत खां साहब की तरह ही सोलो तबला वादक के रूप में अपना खास मकाम बनाना चाहता है। शादाब का कहना है चाहे कितने भी नए नए वाद्य का हम आविष्कार कर लें लेकिन हमारे संगीत की जड़ें इतनी विशाल और मजबूत हैं कि वो अपनी जगह अडिग है और उसे कोई नहीं हिला सकता।

• रजिया रागिनी